







# इस कूटता का कुछ तो निदान है

पूरे देश को झकझोर देने वाली दिल्ली के सुल्तानपुरी हादसे के दोरान कार में फंसी अंजलि दर्द से चीखती रही, मगर पांच दरिए गाड़ी दौड़ाते रहे। आरोपियों को पता था कि उन्होंने स्कूटी सवार अंजलि को टक्कर मारी थी। उन्हें यह भी पता था कि कार में युवती फंसी थी और उसे गिराने के लिए जानलूँकर कर दो बार यू-टर्न लिया और उसके गिरते ही कार हो गा। वहाँ, दिल्ली के आदर्श नगर में दोस्तों तोड़ने पर युवती को चाकू से गोद डाला। पीड़िता के गले तैर और हाथ पर जखम हो गए। व्हाइटिला को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। कुछ समय पहले ही प्रिया मर्ड केस सामने आया, जिसमें हथयोग आफताब ने उसके 36 कठोर किए। जारखंड की रेखिया को पति ने 50 दुकड़ी में काटकर फेका। लाखनऊ में भाई ने छाती बहाने की हत्या कर उसे घर में ही दफना दिया। इन सभी हाल की घटनाओं में एक बात कम्पन है—विकिट महिलाएं थीं और आरोपी पुरुष। कहीं आरोपी करीबी रिश्तेदार तो कहीं अनजान व्यक्ति था।

पुरुषों की इस सोच के लिए अंग्रेजी में एक शब्द सामने आया है—‘फेमिसाइड’। ‘फेमिसाइड’ का सीधा—सा मतलब है—महिलाओं की उनके जेंडर की वजह से हत्या। इन दिनों लैटिन अमेरिकी देश में विकिटों में भी यह शब्द काफी चर्चा में है। कारण वहाँ पिछले कुछ महीनों में एक हजार से ज्यादा महिलाओं की हत्या हुई। ज्यादातर मामलों में हथयोग उसके लिए जानते तक नहीं थे, लेकिन दावा किया जा रहा है कि सिर्फ जेंडर की वजह से उन्होंने ये हत्याएं की। विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक अंकेंडे के मुताबिक दुनिया भर में महिलाओं की जितनी हत्याएँ होती हैं, उनमें से 35 प्रतिशत हत्याएं इंटरेट पार्टर यानी बॉयफ्रेंड, पति या एक्स करते हैं। ऐसे उदाहरण एसिड फेंकर या चाकू—गोली या गलौर्फेंड या एक्स गलौर्फेंड की जान ले लेना। इसके अलावा यूनाइटेड नेशन यूपुलेस फैंड के अंकेंडे के मुताबिक दुनिया भर में हर साल 5000 से ज्यादा लड़कियां और फेमिसाइड का शिकायती होती हैं। वहाँ नान इंटरेट फेमिसाइड मामलों में महिला या लड़की के हत्यारे उसके जानने वाले नहीं होते। वो बस जेंडर देखकर हत्या कर देते हैं। मेंसिक्सों में हर साल औसतन 1000 से ज्यादा महिलाओं की ऐसी हत्याएं होती हैं।

कहीं ये रोग हमारे देश में तो नहीं फैल रहा है। वैसे देखा जाए तो पूरी दुनिया में ही सामाजिक तानाबाना बुरी तरह से बिखर रहा है। परिवार टूट रहे हैं। जातिगत, सांप्रदायिक भावनाएं एकदम भड़कने लगी हैं। शुरुआत परिवार से ही होती है। बचपन से हम जो कुछ देखते हैं, उनमें से क्या बात हमारे दिमाग में बढ़ कर जाए, कहा नहीं जा सकता। किसी के साथ कुछ गलत हुआ, वो भी हो सकता है कि आगे चलकर उसका विकृत रूप सामने आए। यह भी हो सकता है कि उसकी कोई सकारात्मक सोच उस विकृति को दूर करने में सहायता हो।

लेकिन भौतिकता के इस दौर में सकारात्मकता पर नकारात्मक ऊर्जा भारी पड़ती दिख रही है। परिवार नाम की इकाई ही समाज का निर्माण करती है। आज के दौर में परिवारों के बिखरने के कई कारण हैं। सबसे बड़ा पारियां हैं जनसंख्या वृद्धि। फिर एक दूसरे के आगे बढ़ने की होड़। हमारी सोच और परंपराओं पर राजनीतिक और सामाजिक बुराईयां भारी पड़ने लगी हैं। केवल मोबाइल या टीवी को ही जिम्मेदार ठहराना ठीक नहीं। जो लोग मोबाइल पर नेट या टीवी के सीरियल नहीं देखते, वो भी मानसिक तौर पर हिस्सक हो जाते हैं। महिलाओं के मामले की जहां तक बात है, तो हर दूसरे—तीसरे दिन प्रेम प्रसंग को लेकर घटनाएं सामने आ रही हैं। इसके हटकर जरा सी बात पर लोग हत्या करने लगे हैं, इसे कौन की मानसिकता कहेंगे? कहीं न कहीं हमारे पास जो सहनशीलता और संवेदनशीलता का खजाना है, वो कम होता जा रहा है।

सचेन—समझने की शक्ति जब खम्म होने लगती है, अक्सर तभी लोग कोई भी हिस्पक कदम उठा लेते हैं। मोनोजिनिक करते हैं, यह हमारे खानपान से लेकर हमारी पूरी जीवनचर्चा के कारण हो रहा है। कहीं कहीं जातिवाद एकदम चमत्कर पर हो तो कहीं जातियां तोड़कर शिद्यां हो रही हैं। और संप्रदायवाद की बात करें तो पूरी दुनिया में आंतरिक रुप से जातिवाद एकदम चमत्कर हो रहा है। यह पूरी तरह से सांप्रदायिक भावनाओं का चरम पर पहुंचने के कारण है। केवल अनपूर्ण लोग ऐसा कर रहे हैं यह केवल पढ़े लिखे, ऐसा कुछ भी नहीं है। कहीं कहीं कहता है कि संस्थानिक देखकर हत्या की, तो कहीं मामलों में हत्या के आरोपियों का सीरियल या मोबाइल पर नेट से वास्तव ही होता है। क्या हम इसी तरह से निर्मम हत्याएं होते देखते रहेंगे? क्या समाज की कोई जिम्मेदारी नहीं बनती? क्या किसी जाति या संप्रदाय पर आरोप थोकपकर अपनी जिम्मेदारियों से बचा जा सकता है? राजनीति को एक तरफ रखकर हमें सोचना होगा।

## नोटबंदी: मोदी को माफी क्यों मिली?

### वेद प्रताप वैदिक

नोटबंदी 2016 के नंबरमार माह में लागू हुई थी। उसके खिलाफ जो याचिकाएँ सोचेंच न्यायालय में लगी थी, वे सब रद हो गई हैं, क्योंकि पाँच जर्जों में से चारे ने फैसला दिया है कि नोटबंदी घोषित करने में मोदी सरकार ने किसी नियम या कानून का उल्लंघन नहीं किया था। महिला जज बी.वी. नागरक ने अपनी असहमति के अध्यक्ष करते हुए कहा है कि सरकार को या तो नोटबंदी की विषयां संसद से पास करनी थी या उसके पहले वह अध्यादेश भी जारी करवा सकती थी किसी भी जज ने असली मुद्रे पर अपनी कोई राय जाहिर नहीं की है। असली मुद्रा क्या है? वह यहाँ है कि क्या नोटबंदी करना ठीक था? उससे देश को फायदा हुआ या नुकसान? इस मुद्रे पर अदालत की चुप्पी आश्वयजनक है।

नोटबंदी का मूल विचार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का था ही नहीं। यह विचार था मुरुंगों की अर्थकान्ति नामक संस्था के अध्यक्ष अनिल बोकील का। उन्होंने पिछले 20 साल से इस विचार को विकसित करके नोटबंदी की योजना बनाई तो नोटबंदी की विषयां संसद से पास करनी थी। अब अपने कोई राय जाहिर नहीं की है। असली मुद्रा क्या है? वह यहाँ है कि क्या नोटबंदी करना ठीक था? उससे देश को फायदा हुआ या नुकसान? इस मुद्रे पर अदालत की चुप्पी आश्वयजनक है।

मोदी ने उन्हें दस मिनिट का समय दिया लेकिन डेढ़-दो घंटे तक बात की और प्रधानमंत्री बनने पर एक दिन अचानक नोटबंदी की विषयां कर दी। ऐसे योजना को उन्होंने अन्यत गोपनीय रखा। यह जसरी भी था। लेकिन नोटबंदी बुरी तरह से पिट गई। सैकड़ों गोली लोग लालों में खड़े-खड़े मर गए। एक हजार के नोट खत्म किए लेकिन दो हजार के शुरू कर दिए। नए नोट छपने में 50 हजार करोड़ रु. खपा दिए, देश की 86 प्रतिशत नगदी पर प्रतिबंध लग गया। नानाओं और सेंटों ने बैंकों से जोड़-तोड़ करके अपनी योजना से अवगत करवाने का आग्रह बोकील और गोली लोग मारे गए। बोकील की योजना के मुताबिक सबसे ऊँचा नोट रिपोर्ट में ज्यादा विवाद लगाया था। इनमें से एक विवाद के खिलाफ जो विषयां संसद से पास करनी थी था उसके पहले वह अध्यादेश भी जारी करवा सकती थी किसी भी जज ने असली मुद्रे पर अपनी योजना से बदल दिया। अब अपनी योजना को अवगत करवाने का आग्रह बोकील की चुप्पी आश्वयजनक है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक भरत पटेल द्वारा इंडिपेंडेंट प्रेस 11, प्रेस काम्पलेक्स, एमपी नगर, जोन-1, थोपाल से संबंधित समस्त सामाजिक चर्चा के लिए पीयांगी एस्ट के तहत जिम्मेदार। समस्त व्यापिक कार्यवाहियों के लिए श्रेष्ठीकारा भोपाल नगरपालिका द्वारा जारी दिया गया। जी.न. थोपाल द्वितीय 48 प्रम। ई-मेल: dainiksandhyaprakash.in, वेबसाइट: dainiksandhyaprakash.in

# राजनीति में भ्रष्टाचार, क्या 2023 में हो सकता है सुधार?

## सरयूसुत मिश्र

जिस कानून पर नजर दौड़ाई जाए हर तरफ भ्रष्टाचार की शिकायतें हैं। भ्रष्टाचार और घोटालों पर राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप ऐसा आधार देते हैं कि जारी वात से वास्तव में ही होती है कि जिस विवाद की बात होती है कि राजनीति में ज्यादा भ्रष्टाचार है या ब्यूरोक्रेसी में?

लोकतंत्र में राजनीति शासन प्रणाली का लीडर है व्याप्रोक्रेसी का विवाद कालू द्वारा जाता है कि राजनीति में ज्यादा भ्रष्टाचार है या ब्यूरोक्रेसी में? नियंत्रण चौंकै राजनीति का दायित्व व्याप्रोक्रेसी का सांचालन, नियंत्रण राजनीति का दायित्व व्याप्रोक्रेसी का है। इसलिए व्याप्रोक्रेसी का भ्रष्टाचार रोकने की तरफ नहीं होती है। भ्रष्टाचार के लिए जारी वात होती है कि व्याप्रोक्रेसी का वर्तमान मॉडल ईमानदार लीडर का ही परिणाम माना जाता है।

राजनीति के लिए जारी वात होती है कि व्याप्रोक्रेसी का वर्तमान लोकतंत्र के साथ समय पहले ही प्रत्यारोप करते हैं। भ्रष्टाचार की सांचालन और व्याप्रोक्रेसी का वर्तमान लोकतंत्र के साथ समय पहले ही प्रत्यारोप करते हैं।

राजनीतिक भ्रष्टाचार पर जारी वात होती है कि व्याप्रोक्रेसी का वर्तमान लोकतंत्र के साथ समय पहले ही प्रत्यारोप करते हैं। भ्रष्टाचार की सांचालन और व्याप्रोक्रेसी का वर्तमान लोकतंत्र के साथ समय पहले ही प्रत्यारोप करते हैं।

जिसकी विवादी की व्याप्रोक्रेसी की वर्तमान लोकतंत्र के साथ समय पहले ही प्रत्यारोप करते हैं।

जिसकी विवादी की व्याप्रोक्रेसी का वर्तमान लोकतंत्र के साथ समय पहले ही प्रत्यारोप करते हैं।

जिसकी विवादी की व्याप्रोक्रेसी का वर्तमान लोकतंत्र के साथ समय प









नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री



शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

हर ग्रामीण पात्र परिवार को आवास हेतु भूखण्ड

## मुख्यमंत्री आवासीय भू-अधिकार योजना

### भू-अधिकार पत्र वितरण कार्यक्रम

मुख्य अतिथि  
शिवराज सिंह चौहान  
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

₹ 255 करोड़ से अधिक  
लागत की बान सुजारा  
समूह जल प्रदाय योजना का  
शिलान्यास

पंचायत प्रतिनिधियों  
एवं ग्रामवासियों की  
कार्यशाला

टीकमगढ़ जिले से  
शुभारंभ

जिले के 10 हजार 918 हितग्राहियों को  
₹ 129.37 करोड़ मूल्य के आवासीय भूखण्डों का वितरण

4 जनवरी, 2023 | अपराह्न 1:15 बजे

राजस्व विभाग, मध्यप्रदेश